ISSN: 2394 5303 | Impact Factor 7.891(IIJIF) | Printing Area® Peer-Reviewed International Journal | August 2021 Special Issue

देगलूर महाविद्यालय, देगलूर

आंतरराष्ट्रीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

प्रिंटिंग एरिया

Printing Area International Interdisciplinary Research Journal in Marathi, Hindi & English Languages

August 2021, Special Issue

अतिथि संपादाक :

१. डॉ. भगवान कदम

२. डॉ. शिवशेट्टे गोविंद

३. डॉ. राठोड अनिलकुमार

४. डॉ. शिंदे प्रकाश

५. डॉ. शेख मुखत्यार

६. डॉ. वारले नागनाथ

७. डॉ. यशवंतकर संतोषकुमार

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.

At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed

Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295

harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

Printing Area

www. विद्यावार्ता® .कॉम

YouTube Channel

Vidyawarta is peer reviewed research journal. The review committee & editorial board formed/appointed by Harshwardhan Publication scrutinizes the received research papers and articles. Then the recommended papers and articles are published. The editor or publisher doesn't claim that this is UGC CARE approved journal or recommended by any university. We publish this journal for creating awareness and aptitude regarding educational research and literary criticism.

The Views expressed in the published articles, Research Papers etc. are their writers own. This Journal dose not take any libility regarding appoval/disapproval by any university, institute, academic body and others. The agreement of the Editor, Editorial Board or Publicaton is not necessary. Editors and publishers have the right to convert all texts published in Vidyavarta (e.g. CD / DVD / Video / Audio / Edited book / Abstract Etc. and other formats).

If any judicial matter occurs, the jurisdiction is limited up to Beed (Maharashtra) court only.

Govt. of India,
Trade Marks Registry
Regd. No. 3418002

http://www.printingarea.blogspot.com

www.vidyawarta.com/03 http://www.printingarea.blogspot.com

INDEX

01) समकालीन उपन्यासों में व्यक्त नारी समस्याएँ एवं स्त्री–विमर्श
डॉ. मितेशकुमार नटवरलाल पटेल, पाटण (उ.गु.) ||14

02) वैवाहिक गठबंधन में स्त्री की स्थिति तथा महादेवी वर्मा की नारी चेतना
अभिलाषा माथुर & डॉ. अवधेश कुमार जौहरी, भीलवाड़ा (राजस्थान) ||17

03) मन्नू भंडारी की कहानियों में नारी – विमर्श
डॉ० संतोष कुमार अहिरवार, सागर (म०प्र०) ||20

04) २१वीं शताब्दी में ग्रामीण महिला सशक्तिकरण का कच्चा चिट्ठा प्रस्तुत करता हरे ...
डॉ अजय सिंह चौहान, रायबरेली, उत्तर प्रदेश ||24

05) उषा प्रियंवदा के उपन्यासों में नारी विमर्श
बीना परमार, अहमदाबाद (गुजरात) ||28

06) नारी विमर्श में नारी आदर्श मूल्य
डॉ. दीनेशकुमार रायसिंहभाई वसावा, पाटन, गुजरात ||30

07) स्त्री विमर्श : स्त्री सुबोधिनी के संदर्भ में
प्रा.डॉ. सौ. मंगला श्री कंठारे, जि. लातूर ||34

08) स्त्री विमर्श – कल आज और कल
डॉ. सुरेखा ||37

09) जीवन संघर्ष की दास्तान : कस्तुरी कुंडल बसै
प्रा.दिगंबर ज्ञानोबा गायकवाड, जि.लातूर ||40

10) समकालीन महिला हिन्दी उपन्यासकारों के उपन्यासों में नारी–विमर्श
गामीत विपुलकुमार सीमाभाई, पाटन, गुजरात ||43

11) दीप्ति खण्डेलवाल के कहानियों में नारी विमर्श
डॉ. अल्पेशभाई एच. गामीत, पाटण (उ.गु.) ||46

12) कस्तूरी कुण्डल बसै– स्त्री विमर्श के आईने से
डॉ.गोविंद गुंडप्पा शिवशेट्टे, जिला लातूर ||49

41) दलित जीवन की मार्मिक अभिव्यक्ति : धरती धन न अपना
डॉ. हिमानी सिंह, कोटा (राज.) ||145

42) हिंदी साहित्य में चित्रित दलित विमर्श
किर्ती कशिनाथ होसुरकर, औरंगाबाद ||149

43) दलित इतिहास और 'दहाड उठा था सिंह'
Dr Gopika K K, Kannur, Kerala ||152

44) बीसवीं सदी की दलित कविता का आत्म–संघर्ष
डॉ. लियाकत मियाभाई शेख, औरंगाबाद, (महाराष्ट्र) ||155

45) वैदिक अनार्य नारी एवं आदिवासी नारी में दलित विमर्श
डॉ. मितेशकुमार नटवरलाल पटेल, पाटण (उ.गु.) ||159

46) राकेश वत्स के उपन्यास : दलित –चेतना की अभिव्यक्ति और शोषण का खंडन
डॉ.के.नीरजा, राजमहेंद्रवरम, आंध्र प्रदेश ||162

47) हिंदी दलित कविता की भूमिका
प्रा.डॉ.प्रकाश सदाशिव सूर्यवंशी, जि.परभणी ||164

48) ओमप्रकाश वाल्मीकि जी के काव्य में अभिव्यक्त दलित चिंतन
डॉ. प्रवीणकुमार न. चौगुले, सांगली ||167

49) मोहनदास नैमिशराय की कहानियों में अभिव्यक्त मानवाधिकार
डॉ प्रीति के, कण्णूर, केरला ||171

50) 'सदियों के बहते जख्म' काव्य संग्रह में अभिव्यक्त दलित चेतना
डॉ. संतोष विजय येरावार, जि. नांदेड ||175

51) दलित साहित्य के सामाजिक सरोकार
श्याम सिंह, मेरठ (उत्तर प्रदेश) ||178

52) ओम प्रकाश वाल्मीकि के काव्य में चित्रित विद्रोह के स्वर
डॉ शहनाज महेमुदशा सय्यद, जि. सांगली ||183

53) प्रेमचंद और दलित–विमर्श
डॉ. सिन्धु सुमन, सहरसा ||187

www.vidyawarta.com/03 http://www.printingarea.blogspot.com

संदर्भ सूची —

१.मोहनदास नैमिशराय , आवाजें, भूमिका

२.वही, पृ. 32

३.वही, पृ. 24

४.वही , पृ. 17

५. वही, पृ. 19

६.वही, पृ. 14

७.वही, पृ. 16

□□□

50

'सदियों के बहते जख्म' काव्य संग्रह में अभिव्यक्त दलित चेतना

डॉ. संतोष विजय येरावार
हिंदी विभाग प्रमुख,
देगलूर महाविद्यालय, देगलूर, ता.देगलूर, जि. नादेड

****

साहित्य अपना समाजिक दाईत्व निभाते हूयें जनमानस में चेतना जागृत करनें का कार्य निरंतर करता रहा हैं। स्त्री, आदिवासी, कृषक, दलित आदि चेतना को अभिव्यक्त करने का कार्य साहित्य नें किंया हैं जो वर्तमान दौर की आवशकता हैं। दलित चेतना जाति तक सिमित न होकर वह परिवर्तन, संघर्ष क्रांति और मानवी अधिकारों का प्रतीक हैं। वह हर कोई दलित हैं जो शोषित, वंचित प्रताडित एवं अभावग्रस्त हैं। ओमप्रकाश वाल्मिकि इस सम्बन्ध में लिखते है, ''दलित व्यथा, दु:ख, पीडा शोषण का विवरण देना या बखान करना ही दलित चेतना नहीं है या दलित पीडा का भावुक और अश्रु विगलित वर्णन जो मौलिक चेतना से विहीन हो। चेतना का सीधा सम्बन्ध दृष्टि से होता है, जो दलितों की सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, सामाजिक भूमिका की छवि के तिलस्म को तोडती है। वह है दलित चेतना। दलित मतलव मानवीय अधिकारों से वचिंत सामाजिक तौर पर जिसे नारा गया हो। उसकी psuk ; kuh nfy r psukA''[1] दलितों को मानसिक दशष्टि सें परिवर्तित कर मुख्य प्रवाह दलितों मे चेतना जगाना और सामाजिक समानता के लिए चेतना निर्मान करने का कार्य साहित्य करता हैं।

'सदियों से बहते जख्म' मराठी भाषी कवि दामोदर मोरे जी का काव्य संकलन है। प्रा. दामोदर मोरे

के विषय में नारायण सुर्वे लिखते है, प्रामोरे मराठी दलित कविता के एक प्रमुख कवि है। बहुमुखी प्रतिभा के धनी प्रा. दामोदर मोरे अच्छे वक्ता और साहित्य की सभी विधाओं में लिखने वाले सिध्दहस्त कवि–लेखक हैं। वे कवि, शोधकर्ता, श्रेष्ठ समीक्षक, सम्पादक, पटकथा–लेखक और लोक–साहित्य के उपासक के रूप में हमेशा गौरव के साथ याद किये जाते हैं। महाराष्ट्र के विविध सांस्कृतिक, सामाजिक और परिवर्तनकारी आन्दोलनों को आप सदैव बढ कर तिलक करते हैं और अपनी सहभागिता से उसे गौरवान्वित भी करते है। इस प्रकार की समस्त परिवर्तनकामी गतिविधियों में भाग लेनेवाले मोरे एक दृष्टि–सम्पन्न कवि व विचारक है।''

दलित, वंचित, पीडित एवं शोषित वर्ग की पीडा को कवि नें अभिव्यक्त किया है। दलितों की वास्तविकता कों उघाडने का प्रयास मोरे जी ने किया है। जातिवादी व्यवस्था, वर्णव्यवस्था और अस्पृश्यता के कारन दलितों का शोषन सदियों से होता रहा हैं।

'मुझे चूमते हुए
हवा ने
मुझसे पूछा
तू कौन है?
अँगडाइयॉ लेते हूए
मैं बोला –
जातिवाद के माँझे से कटी
अस्पश्यता की आँधी में हडबडाती
नी–नीली–सी
मैं, एक कटी पतंग हूँ।''[३]

अस्पृश्यता के कारन समाज में निम्नवर्ग का सदियों से शोषन होता रहा हैं। कुंठित मानसिकताने अनेको का जीना दूश्वार कर दिया हैं। जबतक मानसिकता सकारात्मक रूप में परिवर्तित नहीं होगी तब तक शोषन की प्रकिया निरंतर चलती रहेगी। दलितों से मानवता के धरातर पर व्यवहार हि समानता कानिर्माण कर सकता है। अपमानित और तिरस्कृत व्यवहार संघर्ष को जन्म देता है। समाज में अगर शांति, प्रेम, सदभाव प्रस्थापित करना हैं तो सभी के साथ मानवीय व्यवहार आवश्यक हैं। संघर्ष,विरोध, का प्रतिकार संघर्ष और विरोध से संभव नहीं विरोध और संघर्ष को दूर करने का एकमात्र रास्ता प्रेम,सदभाव और समानता है। सभी के साथ मानवीय व्यवहार ही सभी का धर्म होना चाहिए!

किसी के शब्द शूल बनते हैं।
तो अपने शब्द को
अपना धर्म मानो।[४]

मानवता धर्म हि सबसे बडा धर्म हैं। जातियता, अस्पश्शता यह तो अमानवीय कृत्य हैं। आर्थिक, सामाजिक विषमता के कारन निम्न, पिछडे, मजदूर एवं व्यवस्था से कटे हूये सभी को अभाव में जीवन व्यतित करना पड रहा हैं। भारत में आर्थिक विषमता की जडे अतंत्य मजबूत हैं। एक तरफ मुठ्ठी भर लोग आराम की जिंदगी बसर कर रहे तो दूसरी तरफ गरिबों को न रहने के लिए घर है न खाने के लिए अन्न। अतंत्य बदहाली में जीवन व्यतित करना पडता हैं। तथाकथित उच्चवर्ग द्वारा दलित, किसान मजदूर और पिछडों का आर्थिक शोषन किया जा रहा हैं। जातियवादि व्यवस्था के कारन निम्नवर्ग को अपमानित जीवन व्यतित करना पड रहा हैं। दलित वर्ग के अभावग्रस्त जीवन की पीडा को 'मेरा बचपन' कविता में अभिव्यक्त किया है।

''मेरा बचपन
स्कूल जा रहा था'
जूता नहीं था पाँव में।
मेरा बचपन
फटी किताब में।''[५]

आर्थिक एवं सामाजिक विषमता के कारन दलित वर्ग असहाय और कुंठित जीवन जी रहा है। विकास के नाम पर इनके हातों में केवल धोखा, पाखंड और दरिद्रता ही हिस्से आई हैं। जातिवाद के अग्नी ने पिछडों को बर्बाद कर दिया हैं। पशुतुल्य व्यवहार के

घरविदार बनने की जिल्लत उठाने के लिए मजबूर होना पड रहा है। सारे सन्दर्भ की जड विकृत मानसिकता सेउपजी जातियवादी एवं साम्राज्यवादी सोच है। सांप्रदाईकता, धार्मिक एवं जातिय दंगल भी पशुतुल्य मानसिकता का परिनाम है। कवि जातियवाद और साम्राज्यवाद का घोर विरोध है। शोषन, विषमता, क्रुरता, पशुता, अमानोयता, यह सब इसी के परिनाम स्वरूप है।

"आदमी के अंदर की द्वेषाग्नि
आदमी को ही आदमी से लडाती है,
आदमी के अन्दर की कामाग्नि
कितनों को जलाती है,
आदमी की मोहाग्नि
जलाती है — जिन्दगी का आसमान
साम्राज्यवाद की ईर्ष्याग्नि ने ही जलाया नागासाकी
और हिरोशीमा"५

जातीवाद ने कारन मानव और मानव, समाज और मानव के बीच की दुरी को बढाया है। मानव निर्मित जाति ने मानव का जीवन नरक और बदहाल बना दिया हैं। अनादी वर्षो से हो रहे सांप्रदाईक झगडे, लूटपाट, हत्या, ये सभी विकृत मानसिकता का परिनाम है। खैरलांजी हत्याकांड, गोहाना कांड यह घटनायें तथाकथित उच्च वर्ग की विकृत, विक्षिप्त मानसिकता का परिनाम है।

जाति–पाति के आधारपर हत्या, बलात्कार, मारपीट मानवता को शोभा नहीं देता है। कवि को सामाजिक विषमता सेउपजी परिस्थिति बर्दाश्त नहीं होती। सदियों से उच्चवर्ग नें जाति के आधारपर निम्न जाति के साथ गुलामों और पशू जैसा व्यवहार किया हैं। कवि नें भोगी हुई पीडा को अभिव्यक्त किया हैं। कवि सदियों से चली आ रही विकृत मानसिकता में बदलाव के अभिलाशी है।

"मुझे बर्दास्त नहीं होता
कच्ची कलियों का
भारतीय संविधान का होना।"६

भारतीय समाज व्यवस्था में मची लुटपाट, राजनीतिक विकृतिकरण, सत्तापाने की लालसा से उपजी षडयंत्र कारीवृत्ती, सामान्य जनमानस को बाँटने की राजनीति, स्वार्थ प्राप्ती के लिए फैलाई गई धर्मांधता, राजनीतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक विडंबना कवि को बर्दास्त नहीं होती। सामाजिक बदलाव हेतू वे अपनी लेखनी चलाते है।

"प्रिय आजादी
मन्दिर से विहार तक।"७

किसान–दलित, पिछडे वर्ग के लिए आजादी ऊँट के मूँ मे जिरे के समान फायदेमंद साबित हुई है, न अत्याचार रूका और नही शोषन। पहले अँग्रेज शोषन करते थे और आजादी के बाद नेता, प्रशासकिय अधिकारी, जमिंदार और भांडवलदार शोषन करने लगे। आजादी ने भी आम लोगो को तडपता छोड दिया है। राजनेता सांप्रदायिकता, धर्मान्धता, जातीवाद का झुनझुना हिलाकर अवाम को मूर्ख बना रहें है और अपने स्वार्थ की रोटी सेख रहे है। कवि ने प्रस्थापित व्यवस्था, प्रताडित, भ्रामक एवंविकृत राजनीति के विरोध में अक्रोश व्यक्त किया है। दलितों को जागृत कर उन्हें वास्तविकता से परिचित करने का सराहनीय कार्य कवि ने किया है।

समाजिक समस्यावों को उनकी समगृता से उदघाटित कर, समाज को समानता और विकास के रास्ते पर लाने का प्रयत्न साहित्य एवं साहित्यकार करते है। जातिप्रथा ने घृणा, तिरस्कार, संकीर्णता, मिथ्य स्वाभिमान, अहंकार और स्वार्थ की भावना को बढाया है। जाति, पंथ, वर्ग, वर्ण एवं धर्म के नामपर दलितों, पिछडो एवं वंचितो का शोषन भारतीय समाजव्यवस्था का सबसे बडा कलंक है। जातिप्रथा के कलक को मिटाना है तो सामाजिक सुधार और वैचारिक परिवर्तन की आवशकता है। दलित चेतना हि वह जरिया है जिसके माध्यमसे समाज को बदला जा सकता, "वर्ण–व्यवस्था जाति भेद और साम्प्रदायिकता का विरोध दलित चेतना की प्राथमिकताओं में है। दलित

ISSN: 2394 5303 | Impact Factor 7.891(IIJIF) | Printing Area® Peer-Reviewed International Journal | August 2021 Special Issue | 0178

चेतना अलगाववाद की जगह समता, एकता और भाई—चारे का समर्थन करती है। वह मानवमुक्ति संगर्ष से मानव की स्वतन्त्रता एवं सामाजिक न्याय की पक्षधर है, और सामाजिक बदलाव के लिए प्रतिबध्द है। वह आर्थिक क्षेत्र में पूँजीवाद का विरोधी मानती है। जहाँ वर्ग विहीन, वर्ण विहीन समाज की वह पक्षधर है वहीं भाषावाद, लिंगवाद की वह विरोधी है।''[८] कवि भी दलित चेतना के माध्यमसे एकता, समानता, मानवता और बदलाव के पक्षधर हैं। दलित वर्ग के जीवन में व्याप्त विसंगति, समस्यायों और उनके वास्तविकता को उघाडने का कार्य किया हैं। कवि समाज के सोंच में भी बदलाव के पक्षधर हैं सदियों के बहते जख्म कविता संग्रह के माध्यमसें प्रा.दामोदर मोरे जी ने दलित वर्ग को समाज, और विकास के मूख्य प्रवाह में लाने का सराहनीय कार्य किया हैं। दलित वर्ग की पीडा संत्रास, त्रासदी, वेदना और समस्यावों को वाणी प्रदान की हैं। कवि जातिवाद, अस्पृश्यता, सामाजिक आर्थिक विषमता का घोर विरोधी हैं।

संदर्भसूची

१.दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र, ओम प्रकाश वाल्मीकि—पृ.सं.२९

२.सदियों से बहते जख्म, प्रा. दामोदर मोरे—पृ. सं. १३०

३.वही—पृ.सं. १२९

४.वही— पृ.सं. १११

५.वही— पृ.सं. १०६

६.वही— पृ.सं.९७

७. वही— पृ.सं. ९०

८. भारतीय दलित साहित्य, संपादक, मनोज कुमार पटेल, — पृ. सं. २३

□□□

51

दलित साहित्य के सामाजिक सरोकार

श्याम सिंह

शोधार्थी हिन्दी विभाग,

चौधरी चरण सिंह यूनिवर्सिटी, मेरठ (उत्तर प्रदेश)

****

दलित साहित्य के सामाजिक करोकार विषय के अन्तर्गत दो संकल्पनायें दलित साहित्य तथा समाज हैं और सरोकार इन दोनों को जोड़ने वाला कारक है ''सरोकार शब्द अंग्रेजी के कॉन्सर्न अथवा कॉन्सर्नमेन्ट का अनुवाद है। जिसे सम्बन्धशीलता, चिन्ता, उद्विग्नता, दिलचस्पी, हस्तक्षेप आदि के अर्थ में ग्रहण किया t k kg**S**''[1] इस प्रकर दलित साहित्य तथा समाज के अर्न्तसम्बन्ध का अध्ययन सामाजिक करोकार कहा जा सकता है। वास्तव में सामाजिक सरोकार वे सामाजिक विद्रुपतायें हैं जो दलित लेखन की विषय वस्तु वनी हैं और इन विद्रुपताओं की अभिव्यक्ति के माध्यम से दलित लेखकों ने अपनी स्वानुभूत पीड़ायें समाज तथा व्यक्तियों तक पहुंचायी हैं।

दलित जातियाँ प्राचीन काल से ही समाज से वहिष्कृत रही हैं। समाज के उच्च कहे जाने वाले वर्ग दलित की छायामात्र करना भी बुरा मानते हैं। दलित जातियाँ समाज के निम्नतम कार्यों जैसे चमड़े का काम, मैला उठाना, मरे पशुओं का उठाने का काम करते थे। दलित जातियों पर उच्च कहे जाने वाले समाज द्वारा अनेक निर्योग्यतायें लाद दिये जाने के कारण समाज की मुख्य धारा से उनका कोई सम्बन्ध न रहा। सुख सुविधाओं से वंचित रही, रोजगार के अन्य साधनों से वंचित रही, इन जातियों को समाज में वहिष्कृत कर एक कौने में अलग रहने के लिए

Principal
A V Education Society's
Degloor College Degloor